अध्याय

तृतीय

अध्याय तृतीय

शोध प्रविधि एवं प्रक्रिया

3.1.0 प्रस्तावना

मानव की प्रगति के लिए अनुसंधान नवीन ज्ञान प्राप्त करने के लिए व्यवस्थित प्रक्रिया है। समस्या का प्रारंभ जिज्ञासा से होता है, मानव की प्रकृति प्रारंभ से ही जिज्ञासा रही है , वे निरंतर चिंतनशील प्राणी रहा है, वह जानना चाहता है कि किन परिस्थितियों में, किन कारणों से कौन से परिणाम निकलते हैं, यह कारण व समस्याओं को विकसित करते हैं। तथा उन समस्याओं का निदान कैसे किया जाता है। अनुसंधान मानव को प्रगति की ओर ले जाने वाले शक्तिशाली तथा आवश्यक उपकरण सिद्ध हुआ है, अनुसंधान का लक्ष्य प्रगति एवं श्रेष्ठ जीवन का निर्माण करना है, सामान भाषा में अनुसंधान एक ऐसी पद्धति मानी जाती है, जिसके द्वारा किसी समस्या को हल करने के लिए क्रमबद्ध तरीके से ज्ञान एवं सत्य की खोज की जाती है, तथा कुछ सामान्य नियमों का निर्धारण किया जाता है ,यह खोज वास्तविक तथ्यों पर निर्भर होती है | अनुसंधान कार्य में सही दिशा में अग्रसर होने के लिए आवश्यक होता है कि शोध की एक व्यावहारिक रूप रेखा इसमें प्रतिदर्श के चयन की अपनी भूमिका होती हैं |

एक अच्छा तथा उपयोगी प्रतिदर्श संपूर्ण समष्टि वास्तविक प्रतिनिधित्व करता है प्रतिदर्श जितने अधिक सुदृढ़ होंगे परिणाम उतने ही परिशुद्ध वैध तथा विश्वसनीय होंगे। इसके बाद उपकरण का चयन,प्रविधि महत्वपूर्ण होती है, जिसके आधार पर प्रदत्त का संकलन किया जाता है |

पी.एन.कूक के अनुसार- किसी समस्या के संदर्भ में ईमानदारी, विस्तार, बुद्धिमानी तथ्यों उनके अर्थ तथा उपयोगिता की खोज करना ही अनुसंधान है। अंग्रेजी के रिसर्च में रिवर्ण अभिवृत्ति एवं गहनता का धोतक है, सर्च खोज का समानार्थी है, इस प्रकार रिसर्च का अर्थ खोज का पुनरावृत्ति है।

जार्ज जे. मूले के अनुसार – कोई भी व्यवस्थित अध्ययन , जिसका विधान शिक्षा के विज्ञान रूप में विकसित करने के लिए किया हो , शैक्षिक अनुसंधान कहा जा सकता है , रिसर्च शब्द के प्रत्येक अक्षर का अर्थ इस प्रकार हैं –

1. तार्किक चिंतन
2. परिश्रमपूर्वक कार्य करना
3. समाधान की खोज करना
4. शुद्धता निश्चतता
5. विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण

3.1.1 न्यादर्श

प्रस्तावित शोध कार्य के लिए भोपाल के 2 शासकीय विद्यालयों में कार्यरत 40 अध्यापकों (20 अध्यापक प्रति विद्यालय) संस्था प्रधान एवं 40 अध्यापकों का चयन यादृच्छिक विधि से किया जायेगा न्यादर्श को पूर्व प्रतिनिधित्व बनाने के लिए भोपाल जिले को चुना गया है | न्यादर्श के विवरण को निम्न रेखीय चित्र द्वारा प्रदर्शित किया गया है |

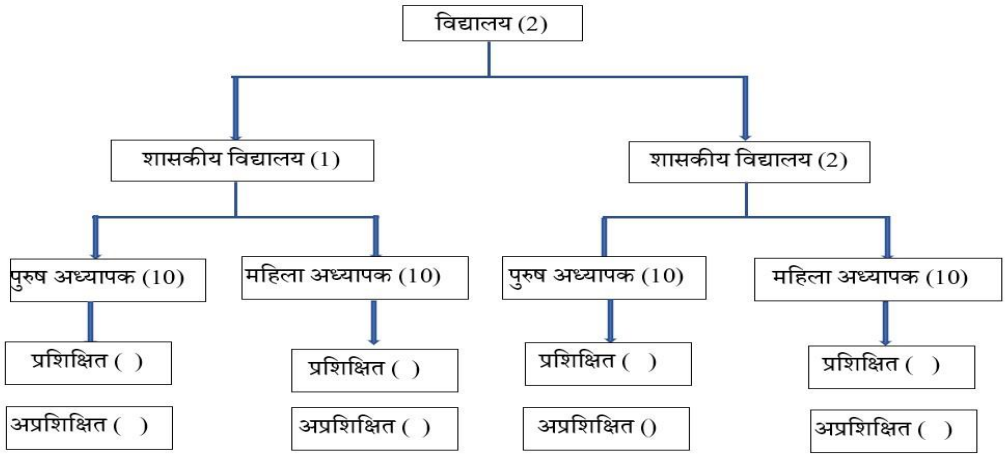

3.1.2 विधि

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधार्थी द्वारा वर्णनात्मक विधि का प्रयोग किया गया है |

3.1.3 चर

शोध समस्या में निम्न चर है –

1. स्वतंत्र चर - लिंग , प्रशिक्षण

2. आश्रित चर – समावेशी शिक्षा के प्रति समझ तथा समतामूलक के प्रति समझ

3.1.4 उपकरण

शोध में प्रदत्त का संकलन करने हेतु विभिन्न प्रकार के उपकरणों की आवश्यकता होती है। जिससे प्रदत्त के विश्लेषण तथा व्याख्या करने में सरलता हो। शोधार्थी द्वारा चयनित किया गया उपकरण स्वयं निर्मित है जो कि विश्वसनीय एवं उद्देश्य पूर्ण है।

समावेशी शिक्षा और समतामूलक शिक्षा के प्रति शिक्षकों एवं प्रधानाध्यापकों की जागरूकता को जानने के लिए जागरूकता मापनी का निर्माण शोधकर्ता द्वारा किया गया हैं | जिस पर शिक्षकों ने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की | यह जागरूकता मापनी 3 बिन्दुओं पर आधारित थी , सहमत , अनिश्चित , असहमत जिसमें किसी एक बिन्दु पर अपनी प्रतिक्रिया सही का निशान लगाकर व्यक्त करनी थी |

जो पूर्णतः समावेशी शिक्षा और समतामूलक पर आधारित है तथा जागरूकता मापनी कथनों के रूप में इन कथनों का उत्तर शिक्षकों द्वारा दिया गया है तथा उन्ही उत्तर के आधार पर शोधार्थी द्वारा प्रदत्त का संकलन किया गया है |

समावेशी शिक्षा और समतामूलक के प्रति शिक्षकों की जागरूकता को जानने के लिए प्रश्नावली बनाई गई है जिसमें 26 कथन है।

3.1.5 प्रदत्त का संकलन

प्रदत्तों के संकलन हेतु शोधार्थी सर्वप्रथम विद्यालय के प्रधानाध्यापक से मिले तथा उन्हें अपने लघु शोध से अवगत कराया गया। फिर उन्होंने शोध की उपयोगिता को समझकर प्रदत्त के आकलन हेतु अनुमति प्रदान की। प्रधानाध्यापक की अनुमति मिलने के पश्चात विद्यालय के प्राथमिक शिक्षकों से मिले तथा निम्न निर्देश दिए गए।

मुझे आप लोगों से समावेशी शिक्षा और समतामूलक के बारे में कुछ जानकारी लेनी है । और उनकी निजी जानकारी को पूरी तरह से गोपनीय रखा जाएगा । अतः आप प्रदत्त के संकलन हेतु सहायता करें । प्रदत्त को विद्यालय के शिक्षकों से अध्ययन के लिए संग्रहित किया गया है |

3.1.6 सांख्यिकीय विश्लेषण

प्रारंभिक सांख्यिकी का प्रयोग वर्णनात्मक सांख्यिकी के अंतर्गत किया गया हैं | जिसमें मुख्य रुप से माध्य मानक विचलन का प्रयोग की गणना की गई है | उसके आधार पर अध्यापक तथा प्रधानाध्यापको की समावेशी शिक्षा तथा समतामूलक के प्रति जागरूकता का अध्ययन किया गया हैं ।